राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–pr.rajbhavan@gmail.com
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

राज्यपाल ने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति को देशी गायों के नस्ल–सुधार के कार्यक्रमों पर तत्परतापूर्वक अमल करने को कहा

पटना, 12 सितम्बर 2018

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री लाल जी टंडन से आज बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ॰ रामेश्वर सिंह ने मुलाकात कर विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में सविस्तार बातचीत की।

मुलाकात के दौरान, महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री टंडन ने कुलपति डॉ॰ सिंह से कहा कि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मूलाधार कृषि और पशुधन है। उन्होंने कहा कि पशुधन का विकास होने से गरीबों का भी आर्थिक सशक्तीकरण होगा। इस परिप्रेक्ष्य में राज्य के विकास में पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय को देशी नस्ल की गौ–पशुओं के नस्ल सुधार की दिशा में तेजी से कार्य करना चाहिए तथा आवश्यक शोध–कार्य भी होने चाहिए। राज्यपाल ने कुलपति को बिहार में गिर नस्ल, सहिवाल नस्ल तथा थारपारकर नस्ल की गायों के नस्ल–विकास की दिशा में तेजी से काम करने का सुझाव दिया। राज्यपाल ने कहा कि देशी नस्ल की गायों में रोग–प्रतिरोधक क्षमता तुलनात्मक रूप से काफी अधिक होती है। ये गायें बिहार और अन्य उत्तर भारतीय राज्यों के ज्यादा तापमान वाले इलाकों के भी अनुकूल होती हैं। इनके रख–रखाव और चिकित्सा पर भी काफी कम खर्च होता है। साथ ही, इन देशी नस्ल की गायों से कम लागत पर ही ज्यादा दुग्ध–उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। प्रति लीटर दुग्ध–उत्पादन पर कम लागत के कारण यह अल्प आय वाले पशु–पालकों की कमजोर आर्थिक स्थिति के लिहाजन भी उपयोगी हैं।

राज्यपाल ने राज्य में High Genetic Merit वाले उन्नत नस्ल के साँढ़ों को भी देहाती क्षेत्रों में उपलब्ध कराने पर जोर देते हुए कहा कि आज तो देहाती नस्ल की गायों में भी भ्रुण–धारण के क्रम में लिंग–निर्धारण की व्यवस्था विकसित करने के लिए व्यापक शोध चल रहे हैं। राज्यपाल ने कुलपति को देशी नस्ल की गायों में भ्रुण–धारण के क्रम में लिंग–निर्धारण की पद्धति विकसित करने हेतु आवश्यक शोध–कार्य को गंभीरतापूर्वक संचालित करने को कहा, ताकि आज के परिवेश में अधिकतर बछड़ियों की ही पैदाईश सुनिश्चित हो सके।

राज्यपाल ने कहा कि दुग्ध–संग्रहण के कार्य में लगी सहकारी संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु भी विश्वविद्यालय को आवश्यक परियोजनाएँ संचालित करनी चाहिए तथा इनसे सम्बद्ध और अन्य वैसे सभी पशुपालकों को प्रत्येक वर्ष पुरस्कृत और सम्मानित करने का कार्यक्रम बनाना चाहिए, जो देशी नस्ल की गायों या अन्य पशुओं के जरिये अधिक दुग्ध–उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। कुलपति ने राज्यपाल को आश्वस्त किया कि विश्वविद्यालय उनके मार्ग–निर्देशों और सुझावों पर तत्परतापूर्वक अमल करेगा।

.....